①

Q. 1. ह्यूम के अनुसार प्रत्ययों की उत्पत्ति की व्याख्या करें। तथा बताइये कि ह्यूम का ज्ञान-सिद्धान्त क्या है?

Ans :→ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में ह्यूम दार्शनिक ने अपने मानववादी दृष्टिकोण से मानव की मानसिक दुनिया का अध्ययन एवं चिंतन तथा निरीक्षण के द्वारा मानसिक प्रतीतियों का विश्लेषण किया है। मानसिक प्रतीतियों के बारे में ह्यूम का स्पष्ट एवं सजीव विचार प्रत्यक्ष प्रतीतियों की ओर स्पष्ट किया है। ह्यूम ने 1711 ई० से लेकर 1776 ई० के बीच में मानसिक प्रतीतियों का विश्लेषण करते हुए कहा है कि प्रत्यक्ष प्रतीतियाँ और मानसिक प्रतीतियों दोनों की तीव्रता में केवल कारण का भेद स्पष्ट होता है, क्योंकि ये दोनों प्रत्यक्ष प्रतीतियों और प्रत्यय का सम्बन्ध उसी प्रकार है जिस प्रकार किसी ओरिजिनल चीज का डूकोपी किया जाता है या यह कहा जा सकता है कि ये प्रत्यक्ष प्रतीतियाँ मौलिक हैं तो प्रत्यय उनकी नकल है। मानसिक प्रतीतियों का तात्पर्य शक्ति और तेजी के साथ विश्लेषण किया जाता है। इसके अन्तर्गत सभी इन्द्रियजन्य बोधों, आवेगों (Passions) और संवेगों (emotions) को समझता है क्योंकि मानस में सबसे पहले वही आते हैं। "ह्यूम के प्रत्ययों से मेरा मतलब प्रत्यय चिंतन की अवस्था में बननेवाले इसके अस्पष्ट प्रतिमाओं (images) से है।" इस प्रकार ह्यूम के अनुसार प्रत्यक्ष प्रतीतियाँ दो प्रकार की होती है—(क) इन्द्रियजन्य प्रत्यक्ष-प्रतीति या बाह्य प्रत्यक्ष प्रतीति और (ख) भाव एवं संवेग, अर्थात् आन्तरिक प्रत्यक्ष प्रतीति।

प्रत्यक्ष-प्रतीति की नकल को प्रत्यय कहा जाता है। प्रत्यय में भी कुछ प्रत्यय स्मृतिजन्य है। स्मृति की प्रतीतियाँ और भी अस्पष्ट और धूमिल होती है। सबसे कम तीव्र और स्पष्ट कल्पना-प्रतीति है। इस तरह सम्पूर्ण मानसिक प्रतीतियों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—(i) प्रत्यक्ष (ii) प्रत्यय (iii) स्मृति और (iv) कल्पना प्रतीतियाँ। प्रत्यय, स्मृति और कल्पना की

Scanned with CamScanner

प्रतीतियां मौलिक प्रत्यक्ष-प्रतीतियों का मुकाबला नहीं कर सकती। इस प्रकार ह्यूम का कथन है कि "मंद-से-मंद प्रत्यक्ष-प्रतीति भी तीव्रतम प्रत्यय से अधिक स्पष्ट, तीव्र और सजीव होती है।"

प्रत्यक्ष-प्रतीतियों की उत्पत्ति के विषय मे थिल्ली (thilly) दार्शनिक का कहना है कि-"मन में बाह्य प्रत्यक्ष प्रतीति तो अज्ञात कारणों से उत्पन्न होती है, जबकि आन्तरिक अनुभव अधिकांश मे प्रत्ययों से उत्पन्न होते हैं।" जैसे - इन्द्रियों पर एक प्रत्यक्ष-प्रतीति उत्पन्न होती है, हम शीत या उष्णता, सुख या दुःख का अनुभव करते हैं। इन प्रत्यक्ष-प्रतीतियों की प्रतिमाएं रह जाती हैं जिन्हे हम प्रत्यय कहते है। तत्पश्चात सुख और दुःख के ये प्रत्यय नयी प्रत्यक्ष-प्रतीतियों को उत्पन्न करते है। जैसे - अभिलाषा और उपेक्षा, आशा और भय, जो कि चिन्तन की प्रत्यक्ष प्रतीतियां है।

ह्यूम ने प्रत्ययों को भी दो भागों में बाँटा है-(i) सरल प्रत्यय (Simple idea) और (ii) मिश्र प्रत्यय (Complex idea)। मिश्र प्रत्यय सरल प्रत्ययों से बनते है। लेकिन, ह्यूम के विचार के अनुसार दोनों में भेद है - ह्यूम ने कहा है कि - "मैं देखता हूँ कि हमारे बहुत से मिश्र प्रत्ययों के अनुरुप मौलिक प्रत्यक्ष-प्रतीतियाँ ही नही होती, और उसी प्रकार बहुत-से मिश्र अनुभवों के कोई प्रत्यय ही नही बनते।

एक उदाहरण के द्वारा ह्यूम ने कहा है कि- "यदि मैं नयें जेरुसलम' नाम के एक शहर की कल्पना कर सकता हूँ, जिसकी सड़के सोने की है, और दीवालें लाल की, इस प्रकार कि शहर मैंने कभी देखा नही है। इस तरह की कल्पना उसी तरह है जिस प्रकार मैं देखता हूँ कि यद्यपि हमारे मिश्र अनुभवों और प्रत्ययों में साधारण तथा बहुत समानता होती है, अर्थात मिश्र प्रत्यय और सरल प्रत्यय दोनों में एक दूसरे के प्रति ठीक-ठीक प्रतिरुप हो।" इसके विपरीत सरल प्रत्यय प्रत्यक्ष प्रतीति के अनुरुप ही होते है। भेद केवल स्पष्टता और तीव्रता का रहता है। कोई भी सरल प्रत्यय बिना अपनी मौलिक प्रत्यक्ष-प्रतीति के नही हो सकता।

ह्यूम ने एक उदाहरणस्वरुप

Scanned with CamScanner

कहा है कि अन्धे व्यक्ति को रूप-रंग का बोध नहीं होता क्योंकि उसे रूप रंग की प्रत्यक्ष-प्रतीति ही नहीं हुई। लेकिन यदि ~~उसे आँख~~ अन्धे व्यक्ति को आँख की रोशनी मिल जाय तो अपनी शरीर के रूप रंग प्रत्यक्ष प्रतीति ही होगी तथा उसके तदनुरूप प्रत्यय प्रतीति का अनुभव ह्यूम ने अपने दर्शन में कहा है कि जिसने कभी शराब के स्वाद की प्रत्यक्ष प्रतीति नहीं होती। इस कारण उसे शराब के स्वाद की प्रत्यक्ष प्रतीति का अनुभव नहीं होता है। इसलिए शराब के स्वाद का प्रत्यक्ष प्रतीति निरोगी को स्पष्ट है। ठीक उसी प्रकार संवेगी और आवेगों के साथ भी वैसे ही सम्बन्ध स्थापित होता है क्योंकि सीधा और सरल हृदय का व्यक्ति कठोरता और प्रतिशोध की भावना से शून्य होता है। इसलिए उन भावनाओं का प्रत्यय भी वह नहीं जानता। स्वार्थी व्यक्ति मित्रता और उदारता के प्रत्यय से अनभिज्ञ रहता है क्योंकि उसे उनकी प्रत्यक्ष-प्रतीति नहीं हो सकती क्योंकि प्रत्यक्ष प्रत्यय प्रतीति की प्रतिमा या नकल के रूप में प्रत्यक्ष प्रतीति का प्रत्यय रूप होता है।

प्रत्यक्ष प्रतीति के बारे में ह्यूम का विचार संशयवादी के प्रतीक होता है क्योंकि प्रत्यक्ष प्रतीति के बारे में ह्यूम दार्शनिक सही उत्तर का आँकलन नहीं कर पाते हैं। प्रत्यक्ष प्रतीतियाँ भौतिक की आध्यात्मिक हैं। यदि इस प्रकार का प्रश्न अन्य दार्शनिक करते हैं तो ह्यूम स्पष्ट रूप से कहते हैं कि प्रत्यक्ष प्रतीतियाँ न भौतिक हैं और न आध्यात्मिक है ये दोनों से तटस्थ (neutral) विलक्षण धारणाएँ हैं। इन विलक्षण धारनाओं से भौतिक पदार्थ भी बन सकते हैं और आध्यात्मिक पदार्थ भी बन सकते हैं। इसलिए ये प्रत्यक्ष-प्रतीतियाँ अणु की तरह स्वतंत्र और पृथक-पृथक हैं।

ह्यूम का प्रत्यय सिद्धान्त साहचर्य नियम के आधार पर आधारित है। साहचर्य नियम प्रवाह प्रत्यय का एक रूप है क्योंकि एक प्रत्यय के बाद दूसरा प्रत्यय, दूसरे प्रत्यय के बाद तीसरा और तीसरे के बाद चौथा प्रत्यय इसी तरह सिलसिला जारी रहता है।

जैसे - गंगा-यमुना के एक लहर के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी के बाद के क्रम में जो सिलसिला जारी रहता है उसे हम क्रमिक प्रवाह अर्थात मनोविज्ञान की भाषा में साहचर्य का नियम की संज्ञा देते हैं। इस साहचर्य नियम के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रत्यय का रूप होता है :-

(i) सादृश्य साहचर्य (Association of Resemblance) ⇒
(ii) विरोध साहचर्य (Association of Contrariety)
(iii) गुण की मात्राओं का साहचर्य (Degrees in quality)
(iv) संख्या का साहचर्य सम्बन्ध (Association of degrees in Quantity)
(v) तादात्म्य का सम्बन्ध (Association of Identity)
(vi) देश कालगत आसन्नता का साहचर्य सम्बन्ध (Association of Contiguity of the ideas in Space and time)
(vii) कार्य-कारण का साहचर्य सम्बन्ध (Association of Cause-effect)

इस प्रकार ह्यूम का प्रत्यय सिद्धान्त अन्य दार्शनिक के सिद्धान्तों से भिन्न है। ह्यूम सन्देहवादी और कारणतावादी जरूर है, फिर भी अनुभव के रूप में इनका सिद्धान्त लॉक और जार्ज बर्कले दार्शनिकों के अनुसार ज्ञान का स्रोत मानते हैं। ह्यूम भी जार्ज बर्कले और जान लॉक के ~~सम्बन्ध में~~ सम्वेदन और स्वयं सम्वेदन सुख दुःख बाह्य संसार का बाह्य ज्ञान, संस्कार आदि का स्वीकार करता है कि फिर भी ह्यूम के ज्ञान सिद्धान्त के साधन जान लॉक और जार्ज बर्कले से भिन्न है। ह्यूम अनुभववादी होते हुए भी ज्ञान के दो साधन मानते हैं - (i) संस्कार (Impression) और (ii) विज्ञान (idea)

विज्ञान के बारे में जान लॉक और जार्ज बर्कले ने भी ह्यूम के विज्ञानवाद को स्वीकार किया है, परन्तु संस्कार को बिल्कुल नहीं माना है। इसलिए ह्यूम ने संस्कार का प्रयोग पाश्चात्य दर्शन में सर्वप्रथम रूप में किया है। वस्तुतः ह्यूम के अनुसार विज्ञान के दो साधन हैं - (i) सरल और (ii) मिश्रित। जान लॉक ने भी सरल और मिश्रित को माना।

Scanned with CamScanner

है। ह्यूम का कहना है कि संस्कार के अन्तर्गत संवेदन तथा स्वसंवेदन, बाह्य तथा आन्तरिक इन्द्रियों के द्वारा होती है। बाह्य इन्द्रियाँ जैसे - आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा सम्बन्धी साथ इसके अन्तर्गत रूप और गन्ध रस, स्पर्श का ज्ञान प्राप्त होता है। ये पाँचों बाह्य संवेदनाएँ आन्तरिक इन्द्रियों से भिन्न होता है। ह्यूम के अनुसार आन्तरिक इन्द्रिय केवल मन है जिसे सुख दुःख आदि का ज्ञान होता है। जिसे हम स्वसंवेदन के नाम से जाना जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि ह्यूम ने अपने प्रत्ययसिद्धान्त के द्वारा लोगों को सम्बन्ध ज्ञान का दर्शन कराया।

The End